# Sangitashram (संगीताश्रम)

## (प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से सम्बद्ध)

## प्रथम वर्ष (गायन)

### Theory – 50 Marks

१. **परिभाषा** - संगीत, भारत की दो मुख्य संगीत पद्धतियां, ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, नाद, नाद स्थान, श्रुति, स्वर, प्राकृत स्वर, अचल और चल स्वर, शुद्ध और विकृत स्वर, कोमल और तीव्र स्वर, सप्तक (मंद्र, मध्य, तार), थाट, राग, वर्ण (स्थाई, आरोही, अवरोही, संचारी), अलंकार (पल्टा), राग, जाति एवं जाति के प्रकार, वादी, समवादी, अनुवादी, वर्जित स्वर, पकड़, आलाप, तान, खयाल, सरगम, स्थाई, अंतरा, लय, लय के प्रकार, मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेका, आवर्तन, ठाह तथा दुगुन।

२. राग परिचय - पाठ्यक्रम के रागों का पूर्ण परिचय।

३. ताल परिचय - पाठ्यक्रम के तालों का पूर्ण परिचय तथा उसे ठाह एवं दुगुन में लिखने का अभ्यास।

४. भातखंडे स्वरलिपि पद्धति का ज्ञान।

५. लिखित स्वर समूहों द्वारा राग पहचान।

६. विष्णु दिगम्बर तथा भातखंडे की जीवनी और उनके संगीत कार्यों का वर्णन।

### Practical – 100 Marks

१. स्वर ज्ञान - ७ शुद्ध तथा ५ विकृत स्वरों को गाने तथा पहचानने का ज्ञान, दो-दो स्वरों के सरल समूहों को गाने तथा पहचानने का ज्ञान, शुद्ध स्वरों का विशेष ज्ञान।

२. लय ज्ञान - एक में एक, एक में दो तथा एक में चार अंकों अथवा स्वरों की लयकारी का ज्ञान, लय की स्थिरता का ज्ञान।

३. दस सरल अंलकारों का सरगम तथा आकारी में अभ्यास।

४. राग - यमन, भूपाली, खमाज, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव तथा बिहाग।

५. इन रागों में साधारण आलाप का ज्ञान तथा गाते समय हाथ से ताली देने एवं तबले के साथ गाने का अभ्यास।

६. ताल - दादरा, कहरवा, तीनताल और चारताल को ठाह तथा दुगुन में ताली देते हुए बोलने का अभ्यास।

७. राग पहचान।

# Sangitashram (संगीताश्रम)

## (प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से सम्बद्ध)

## द्वितीय वर्ष (गायन)

### Theory – 50 Marks

१. **परिभाषा एवं सरल व्याख्या** - ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, कंपन, आंदोलन (नियमित, अनियमित, स्थिर, अस्थिर आंदोलन), आंदोलन संख्या, नाद की तीन विशेषताएं, नाद की ऊँचाई-नीचाई का आंदोलन संख्या से संबंध, नाद और श्रुति, गीत के प्रकार - बड़ा खयाल, छोटा खयाल, ध्रुपद, लक्षणगीत तथा उनके अवयव (स्थाई, अंतरा, संचारी, आभोग), जनक थाट, जन्य राग, आश्रय राग, ग्रह, अंश, न्यास, वक्र स्वर, समय और सप्तक का पूर्वांग-उत्तरांग, वादी स्वर का राग के समय से संबंध, पूर्व और उत्तर राग, तिगुन, चौगुन, मींड़, कण, स्पर्श स्वर तथा वक्र स्वर।

२. राग परिचय - प्रथम तथा द्वितीय वर्ष के रागों का पूर्ण परिचय तथा उनमें सीखी गयी चीजों को स्वरलिपि में लिखने का ज्ञान।

३. ताल परिचय - दोनों वर्ष के तालों का पूर्ण परिचय तथा उन्हें ठाह, दुगुन तथा चौगुन में लिखने का अभ्यास।

४. भातखंडे स्वर लिपि पद्धति का ज्ञान।

५. लिखित स्वर समूहों द्वारा राग पहचान।

६. मिलते-जुलते रागों में समता-विभिन्नता बताने का ज्ञान।

७. तानसेन तथा अमीर खुसरो का जीवन परिचय।

### Practical – 100 Marks

१. स्वर ज्ञान - शुद्ध तथा विकृत स्वरों को गाने तथा पहचानने का विशेष ज्ञान, पिछले वर्ष की अपेक्षा कठिन स्वर समूहों को गाने तथा पहचानने का ज्ञान।

२. लय ज्ञान - ठाह, दुगुन और चौगुन लयों को ताली देकर अंकों तथा स्वरों की सहायता से दिखाना।

३. कठिन अलंकारों को सरगम तथा आकारी में गाने का अभ्यास।

४. राग - बागेश्री, दुर्गा, आसावरी, भैरवी, वृंदावनी सारंग, भीमपलासी तथा देश में छोटा खयाल।

५. यमन, बिहाग तथा अल्हैया बिलावल में विलंबित खयाल।

६. किसी दो रागों में ध्रुपद, ठाह, दुगुन तथा चौगुन की लय में।

७. ताल -एकताल, रूपक, तीवरा, झपताल और सूलताल को ठाह, दुगुन और चौगुन में ताली देकर बोलने का ज्ञान।

८. राग पहचान।

# Sangitashram (संगीताश्रम)

## (प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से सम्बद्ध)

## तृतीय वर्ष (गायन)

### Theory – 50 Marks

१. तानपूरे ओर तबले का पूर्ण विवरण और उनको मिलाने का पूर्ण ज्ञान, आंदोलन की चौड़ाई और उसका नाद के छोटे- बड़ेपन से संबंध, २२ श्रुतियों का सात शुद्ध स्वरों में विभाजन (आधुनिक मत), प्रथम और द्वितीय वर्ष के कुल पारिभाषिक शब्दों का अधिक पूर्ण और स्पष्ट परिभाषा, थाट और राग के विशेष नियम, श्रुति और नाद में सूक्ष्म भेद, ब्यंकटमुखी के ७२ थाटों की गणितानुसार रचना और एक थाट से ४८४ रागों की उत्पत्ति, स्वर और समय के अनुसार रागों के तीन वर्ग (रे - ध कोमल वाले राग, रे - ध शुद्ध वाले राग और ग - नी कोमल वाले राग), सन्धि प्रकाश राग, गायकों के गुण और अवगुण, तानों के प्रकार (शुद्ध या सरल, कूट, मिश्र, बोलतान), गमक, आड़, स्थाई, गीत के प्रकार - बड़ा ख्याल, धमार, होरी, टप्पा का विस्तृत वर्णन।

२. पाठ्यक्रम के रागों का पूर्ण परिचय, स्वर विस्तार तथा तान सहित।

३. इस वर्ष तथा पिछले वर्ष के सभी तालों का पूर्ण परिचय। उनके ठेकों का दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों में तालिलिपि में लिखना। किसी ताल या गीत की दुगुन आदि आरम्भ करने के स्थान को गणित द्वारा निकालने की विधि का ज्ञान।

४. गीतों की स्वरलिपि लिखना। धमार तथा ध्रुपद को दुगुन, तिगुन और चौगुन में लिखना।

५. कठिन स्वर समूहों द्वारा राग पहचान।

६. पाठ्यक्रम के समप्रकृतिक रागों की तुलना।

७. भातखण्डे तथा विष्णुदिगम्बर स्वरलिपि पद्धतियों का पूर्ण ज्ञान।

८. शांरगदेव तथा स्वामी हरिदास की संक्षिप्त जीवनियां तथा उनके संगीत कार्यों का परिचय।

### Practical – 100 Marks

१. स्वर ज्ञान में विशेष उन्नति, तीनों सप्तकों (स्थानों) के शुद्ध और विकृत स्वरों का समुचित अभ्यास, कठिन स्वर समूहों को गाना और पहचानना।

२. अलंकारों को ठाह, दुगुन तथा चौगुन लयों में गाने का विशेष अभ्यास।

३. तानपुरा मिलाने का ढंग जानना।

४. लय ज्ञान में विशेष उन्नति, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों का अधिक स्पष्ट और पक्का ज्ञान, आड़लय का केवल प्रारम्भिक ज्ञान।

५. गले से कण स्वरों के प्रयोग का अभ्यास, कुछ विशेष आलंकारिक स्वर समूहों अथवा खटकों का अभ्यास।

६. तिलक कामोद, हमीर, केदार, तिलंग, कालिगंड़ा, पटदीप, जौनपुरी, मालकौश और पीलू में एक - एक छोटा ख्याल आलाप, तान तथा बोलतान सहित।

७. बागेश्री, आसावरी, वृन्दावनी सारंग, भीमपलासी, देश, जौनपुरी, हमीर, केदार, पटदीप तथा मालकौश इन १० रागों में से किन्हीं ६ रागों में बड़ा खयाल, आलाप, तान, बोलतान इत्यादि सहित।

८. उक्त रागों में से किन्हीं दो रागों में एक - एक ध्रुपद तथा किसी एक राग में एक धमार दुगुन, तिगुन और चौगुन सहित।

९. दीपचन्दी, झुमरा, धमार और तिलवाड़ा तालों के ठेकों को ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयों में बोलना।

१०. राग पहचान में निपुणता।